174 P
662
M

8/1911

1266/192

# राष्ट्रीय गीत

प्रकाशक

## मतवाला मण्डल

गऊघाट मिर्ज़ापुर सिटी ।

IMPERIAL RECORDS DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR 1931
662

प्रथमबार १००० ] [ मूल्य -)

891.431
R 1831

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 662
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

# झंडा ऊँचा रहे हमारा ।

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम-सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमिका तन मन सारा ।
झंडा ऊँचा रहे हमारा

स्वतन्त्रताके भीषण रणमें, लखकर बढ़े जोश क्षण क्षण में,
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इस झण्डेके नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माताकी जै, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

आवो प्यारे वीरों आवो, देश जाति पर बलि बलि जावो,
एक साथ सब मिलकर गावो, प्यारा भारत देश हमारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे,
विश्व विजय करके दिखालावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।
झंडा ऊँचा रहे हमारा

—:०:—

## भारतका भार उतारेंगे

जलियांनवालाका पुण्य दिवस, आया सप्ताह शहीदोंका।
वे चढ़े घमंडो घोड़ों पर, देखें उत्साह शहीदोंका॥
अबकी देवासुर संघर्षण, डण्डीमें होनेवाला है।
उस ओर डायरी लश्कर है, इस ओर सुमनकी माला है॥
देखें दल बांध खड़े अमला, हमला मूठी भर हाड़ोंका।
क्या चमत्कार दिखलाता है, यह बाबा टूटो डाढ़ोंका॥
अबकी मरने मिट जानेकी, कितने मदनोंकी टोली है।
बदला पटेलका लेनेको, चेता घर घर बरदोली है॥
यह कटक अटक तक जावेगा, वे अटक अटकमें जावेंगे।
कश्मीरी केप कुमारी तक, अपना झंडा फहरावेंगे॥
शासनके प्रबल हुताशनमें, आसन भरपूर जमावेंगे।
तिनका भी नहीं उठावेंगे, पर सिंहासन दहलावेंगे॥
अभिमन्यु अनेकों आवेंगे, बढ़ चक्र-व्यूहमें जावेंगे।
ये नमक हलाली करनेको, घर घरमें नमक बनावेंगे॥
जनता जगदम्बा जाग चुकी, शासक—महिषासुर हारेंगे।
करतार कुशल गांधी करसे, भारतका भार उतारेंगे॥

# भारतका कल्याण

रणभेरी हाँ बजती है, तुम पाँव पसारे सोते हो।
बने जनाना वीरों क्यों, तुम समय अनोखा खोते हो॥
छोड़ गुलामी लो अब मैंदा, क्या है तुममें जान नहीं।
राणा, पारथ और शिवाको या हो तुम सन्तान नहीं॥
रणचन्डी के चरणों में, जब शीश सुमन चढ़ जायेगा।
सौख्य, शान्ति, श्री स्वत्व सुधा तब, मृत भारत फिर पायेगा॥
वीरों वनिता बने पड़े हो, आती है कुछ लाज नहीं।
बलि वेदी पर चढ़ जाना है, सोनेका दिन आज नहीं॥
कर्मवीर बन मरो विश्वमें, जीवन की हो चाह नहीं।
हांथों से तुम लगालो सूली, मुख से निकले आह नहीं॥
फिर सब्ज बाग दिखलाने वाले, चरणों में झुक जावेंगे।
अपनी करनी का फल अपने हांथो से खुद ही पावेंगे॥
बूढ़ा सेना नायक पैदल समर भूमि में आता है।
धिक्कार तुम्हें जी जी हुजूर में मजा अभी तक आता है॥
भावी आशा तुम्हीं देश के, तुम्हीं राष्ट्र के जीवन प्रान।
पकड़लो दामन बूढ़े का, हो बूढ़े भारत का कल्यान॥

# उठो ! जागो !!

उठो सपूतो !! स्वदेश वीरों ! गिरी हुई हो दशा सुधारो
कहा हुए क्या व क्या थे पहले, सचेत होके इसे विचारो ॥१॥
कहां तुम्हारा वह आत्म—गौरव, विचार देखो ! हमारे प्यारे।
न शेष कुछ भी रहा है तुममें, प्रताप पौरुष-विहीन सारे ॥२॥
रहेगी कब तक यह मोह निद्रा, उठो ! उठो !! ऐ सोनेवालो।
स्वदेश प्रेमी बनो सभी जन, हृदयसे ईर्षा जलन निकालो ॥३॥
अंधेरा भागा सभी जगे हैं, परन्तु तुम क्यों पड़े हुए हो !
तुम्हें उठायेगा कौन आकर, न अपने पैरों खड़े हुए हो ॥४॥
वृथा समयको बिता बिताकर; विरोध करके सभी गंवाया।
विलाप करती खड़ी है माता, न होश तुमको जरा भी आया ॥५॥
प्रसिद्ध था जो कभी यह भारत, सप्रेम मस्तक सभी नवाते।
समस्त विद्या कलाकुशल था, जगद्गुरु थे, जिसे बताते ॥ ६ ॥
लखो ! वही अब हुआ भिखारी, उसीके बच्चे तड़प रहे हैं।
उसीके धनसे पले जो अबतक, उसीके हकको हड़परहे हैं ॥७॥
न अब भी आलससे हाय चेते, तो बन्धु, योंही बने रहोगे।
मिलेगा ऐसा समय न फिर फिर, अकर्ममें जो सने रहोगे ॥८॥

## बूढ़ा तपस्वी

विद्युत का बल भरा हुआ है, जिस बूढ़े की हाड़ों में।
तेंतिस कोटि हृदयका स्वामी, गरचा आज पहाड़ोंमें॥
अनाचार का नाम मिटाने, देश स्वतन्त्र बनाने को।
शान्त महासागर उमड़ा है, भूतल-भार हटाने को॥
इस दधीचि की टेर देखना, देवों के दुख दाहेगी।
स्वतन्त्रताकी सौम्य सुरसरी, भारतमें बह जावेगी॥
अगर भगीरथ हो जावेगा, सत्य-अहिंसा का गांधी।
विष-वैषम्य विलीन करेगी, सकल विश्वसे यह आंधी॥

## गिरफ्तारी पर

१

लूटा है सेठ बरिस्टरको, हम सबको खूब सताया है।
पाखंडेको भी छीन छीन कर, उसने तो भरमाया है॥

२

छिटकेगी ज्योति बरिस्टरकी, नगरीके कोने कोनेमें।
टोली निकलेगी वीरोंकी, नगरीके कोने कोनेमें॥

—:०:—

## लायेगा रंग यक दिन, खूने-रवां हमारा

मक़तल बना हुआ है, हिन्दोस्तां हमारा;
सड़कों पे बह रहा है, खूने-रवाँ हमारा।
किस नींदमें हो जागो, किस ख्वाबमें हो चौंको?
आलससे मिट रहा है नामो निशाँ हमारा।
तुमतो चलाओ खंजर, शिकवोंसे भी गये हम;
मुंह तक न खुलने पाये क्यों मेहर्बां हमारा?
पहिले ही कर चुके हो, क़ल्बो जिगरको चलनी;
ले आओ क्या करेंगे, तीरो कमाँ हमारा।
हिन्दोस्तांमें कैसी यह आग लग रही है;
दोज़ख बना हुआ है जन्नत-निशाँ हमारा।
माना कि जानो दिल पर, है आपकी हुकूमत;
पर तुमसे भी क़वी है एक हुक्मरां हमारा।
नामुन्सफ़ो तो देखो, वह इसलिए है दुश्मन,
क्यों उनको चाहता है पीरो जवां हमारा।
फ़ाक़ोंसे मर रहे हैं, जेलोंमें भेज भी दो,
वाँ पेट तो भरेगा जाने-जहाँ हमारा।
बस हो चुकीं जफ़ायें, बेहतर हैं क़त्ल कर दो;
है तङ्ग जिन्दगीसे, तिफलो जवाँ हमारा।
आँखें चढ़ा चढ़ा कर, नज़रोंसे गिर गये तुम;
दिल फिर गया है तुमसे, अब तो मियां हमारा।
आले हसन न घबरा नेरंगिये फ़लक से;
लायेगा रंग यक दिन खूने-रवाँ हमारा।

# प्रतिज्ञा

ऐ जन्म भूमि भारत, तेरे लिये मरूँगा।
तेरे लिये जिऊँगा, सुख सम्पदा तजूँगा॥
आवे विपद अनेकों, दुख झंझटें कठिन भी।
दुर्दिन घटा भी लख कर, विचलित कभी न हूंगा॥
सत्पथ कठोर यद्यपि, बाधा वो विघ्न भय है।
लालच हवाके झोंके, तो भी अटल रहूंगा॥
निः क्षोभ है विपद निधि, केवट रहित है, नैया॥
जननी! मै निज भरोसे, पतवार धर चलूँगा॥
साहस कवचको धर कर, असि धर्मका पकड़कर।
मन न्याय पूर्ण दृढ़ कर, आगे सदा रहूंगा॥
जननी! यही प्रतिज्ञा, है प्रेमसे हृदय की।
प्यारी स्वतन्त्रताका, सेवक सदा रहूंगा॥
आ मृत्युकाल माता, तेरा सुनाम जप कर।
तेरी सुगोद ही में, यह देह भी तजूँगा॥

## कर्तव्य

बनो अब सत्याग्रही महान्।

उठो ! उठो !! हे चतुर बन्धुवर धरो देशका ध्यान ;
वीरों अब तुम त्यागी बनकर, करो देश कल्यान ।। बनो अब० ।।
हिंसाहीन वृत्तिको धारो, रक्खो अपनी आन।
खद्दरका दृढ़ कवच पहिन कर, करो युद्ध घमसान ।। बनो अब० ।।
बालक वृद्ध, जवान सभीमें, ऐसा हो अभिमान।
मरें, मिटें, सब करें देश हित, न्यौछावर धनप्रान ।। बनो अब० ।।

## तेरी ताकत !

भालोंसे भाल छिदानेको, तू सिर निकाल कर जाता है;
माताका मान बढ़ानेको, सोना उछाल कर जाता है।
तुझको निहार कर काल-व्याल, भी सुमन-माल बन जाते हैं;
तेरा तिनका तन जानेसे, गिरि-गोवर्धन उठ जाते हैं।
इस छोटी सी झोलीमें, बाबा ! कितने नुस्खे लाया है;
तेरी चुटकीकी धूल विधाता, अहा ! मोहनी माया है।

# आह्वान !

## युवकोंके प्रति

ऐ हिन्दके ज़वानों ! कुछ करके अब दिखादो।
संसारको अहिंसाकी सीख तो सिखादो॥
मरनेका भय दिखाकर तुमको डरा रहे हैं।
अपनी क्षमासे उनके हथियार सब गिरादो॥
मरता है आन पर जो, होता वही अमर है।
सिद्धान्त यह अटल है, मर कर उन्हें बता दो॥
गोराकी मूढ़ गाथा, बादलको बीरता भी।
रणमें गरज गरज कर उनको जरा सुनादो॥
अभिमन्युके सगोती मरनेसे क्या डरेंगे।
कानूनके चक्राबू का भय तो अब भगादो॥
खारी नमक बनाने गांधी जी जा रहे हैं।
ऐसा जो हैं समझते, उनको ये तुम जतादो॥
मीठा बनाके भारतको वह मिठाई देंगे।
भ्रममें पड़े हो साहब दिलसे उसे हटादो॥

# युवतियोंके प्रति

ऐ हिन्दकी युवतियां ! मैदानमें तुम आओ ।
दुर्गाको बेटियां हो, अब जगको यह दिखादो ॥
हो कालिका—कुमारी, तुम किससे डर रही हो ।
बस जांघिया चढ़ाओ साड़ीको अब तहा दो ॥
किसकी मजाल तुमको, तिरछी नजरसे देखे ।
दे 'हांक' भाइयोंके, साहसको यों बढ़ादो ॥
हुंकारसे तुम्हारी, कायर भी वीर होंगे ।
यह गुप्त शक्ति अपनी संसारको दिखादो ॥
है भक्त कालिकाका भारत बहुत दिनोंसे ।
करतूत कालिकाकी प्रत्यक्ष तो करा दो ॥
बहने बढ़ें जो आगे, भाई न फिर हटेंगे ।
हिल मिलके नाव भारत की पार तो लगादो ॥
ऐ हिन्दके जवानों ! ऐ हिन्दकी युवतियों !
अभिमानियोंको गर्दन निज बलसे अब नवादो ॥

# देशभक्त का प्रलाप

हमारा हक़ है हमारी दौलत किसीके बाबाका ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा किसीके ख़ालाका घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर अमर है निसार तन मन स्वदेश पर है।
है चीज़ क्या जेलख़ाने मशीनें कज़ाका भी हमको डर नहीं है॥
न देशका जिसमें प्रेम होवे दुखोंके दुखसे जो दिल न रोवे।
खुशामदी बनके शान खोवे वो खर है हर्गिज़ बशर नहीं है॥
हुकूक़ अपने ही चाहते हैं न कुछ किसीका बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ खुदगरज़ किसीकी भलाई मद्दे नज़र नहीं है॥
हमारी नस नसका खून तूने बड़ी सफ़ाईके साथ चूसा।
है कौनसी तेरी पालसी वो जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥
बहाया तूने है खून उसीका है तेरे रग रगमें अन्न जिसका।
बता दे बेदर्द तू ही हक़से सितम ये है या क़हर नहीं है॥
जो बे गुनाहोंको है सताता कभी न वह सुखसे चैन पाता।
बड़े बड़े मिट गये सितमगर क्या इसकी तुझको खबर नहीं है॥
संभल सभल अब भी ओ लुटेरे है तेरे पापोंका अन्त आया।
कि ज़ुल्म करनेमें तूने ज़ालिम ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है॥
गज़ब है हम बेकसोंकी आहें ज़मीन औ आसमां हिला दें।
ग़लत है समझे "कमल" जो समझे कि आहमें कुछ असर नहीं है॥

---

# राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारतका डंका आलममें बजवाया वीर जवाहिर ने।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो समझाया वीर जवाहर ने॥
वह लाल जो मोती लालका है, है लाल दुलारा भारतका।
निद्रामें भारतको लखकर जगवाया वीर जवाहर ने॥
चोटी है राजनीति उसने छानी है खाक विदेशोंकी।
समता स्वतंत्रताका मारग दिखलाया वीर जवाहर ने॥
अंगरेजोंकी मृगतृष्णामें भूले थे भारतवासी सब।
पूरी आजादीका मन्तर बतलाया वीर जवाहर ने॥
बिजली है वाणीमें उसकी जादू है आंखोंमें उसकी।
देखा जिसको एक पल भरमें अपनाया वीर जवाहरने॥
आदर्श चरितसे अपने वह युवकोंका है सम्राट बना।
आज़ादीका ऊँचा झंडा फहराया वीर जवाहर ने॥
एक रोशन आग धधकती है आजादीकी उसके दिलमें।
जिससे युवकोंका मुर्दा दिल चमकाया वीर जवाहर ने॥
दे दें स्पीचें ज़िन्दा दिल कमजोरी दूर भगा दी सब।
रग रगमें खूं आज़ादीका दौड़ाया वीर जवाहर ने॥
नवयुवक करोड़ों भारतके भूले थे भोग विलासोंमें।
युवकोंकी शक्तीको एक दम उसकाया वीर ज़वाहरने॥
पूँजीपति ज़मीदार करते हैं जुल्म मजूर किसानों पर।
बन साथी दीनोंको धीरज धरवाया वीर जवाहर ने॥
हिन्दू मुसलिम सिख जैन इसाई पारसी भाई भाई हैं।
सब ऊँच नीचका भेद भाव मिटवाया वीर जवाहर ने॥
गांधी आशिष दे कर बोले कुर्क बनूगा मैं तेरा।
सब राष्ट्रपति बन कर सेहरा अपनाया वीर जवाहर ने॥
लखकर "प्रकाश" यह भारतका अचरजमें डूबी है दुनियां।
कांग्रेसको करके मुट्ठीमें हर्षाया वीर जवाहर ने॥

## उग्र ग्रन्थावली

उक्त ग्रन्थावलीमें कैसी-कैसी अद्भुत पुस्तकें प्रकाशित होती हैं यह किसीसे छिपा नहीं हैं। अपने पाठकों की सुविधाके लिये हमने, ज़मानतकी तरह १) एक रुपया लेकर, स्थायी ग्राहकोंको उग्रजी की सभी रचनाएं पौने मूल्यमें देनेकानिश्चय किया है।

आप भी आजही १) भेजकर हमारे स्थायी ग्राहक बन जाइये

**बीसवीं सदी पुस्तकालय,**

गऊघाट, मिरज़ापुर सिटी यू० पो०

# बीसवीं सदी पुस्तकालय-गऊघाट,

## मिर्जापुरकी पुस्तकें

| | | |
|---|---|---|
| १ | मधुकरी „ | ३) |
| २ | रंगमहल रहस्य „ | ४॥) |
| ३ | भिखारिणी „ | ३) |
| ४ | दृश्यदर्शन „ | १) |
| ५ | भूलचूक „ | ।॥) |
| ६ | कम्यूनिज्म क्या है „ | ॥=) |
| ७ | मेरी हजामत „ | ॥=) |
| ८ | प्रेमकान्त „ | १॥) |
| ९ | देवी और दानवी „ | ।=) |
| १० | उत्सर्ग „ | ।) |
| ११ | स्त्रीके पत्र „ | १) |
| १२ | कर्मक्षेत्र „ | १।॥) |
| १३ | मिश्रकी स्वाधीनता | २) |
| १४ | इङ्गलैण्डके सांगठनिक कानून | ३।) |
| १५ | सामाजिक रोग „ | १) |
| १६ | भीम चरित्र „ | ।॥=) |
| १७ | स्वराज्य सोपान „ | १) |

### क्रान्तिकारी !

उग्र-लिखित

| | |
|---|---|
| दोज़खकी आग „ | १॥) |
| दिल्लीका दलाल „ | १॥) |
| निर्लज्जा „ | १॥) |
| चार बेचारे „ | १॥) |
| बलात्कार „ | १॥) |
| इन्द्र-धनुष „ | १॥) |
| बुधुआकी बेटी „ | ३) |
| चाकलेट „ | १) |
| चन्दहसीनोंके खुतूत „ | ।॥) |

और

**चिनगारियां १॥)**

तो

**जब्तही हो गयी ।**

Printed by N. K. Tiwary, at the Bisvin Sadi Printing Press, 'Matwala' Goughat, Mirzapur City.